Roll No. ……..

MASL–202

गद्य एवं पद्य काव्य

एम. ए. संस्कृत (एम. ए. एस. एल.-12 / 16 / 17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2018

Time : 3 Hours **Max. Marks : 80**

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित श्लोकों एवं गद्यांशों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधुमूर्ध्ना
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥

(ख) तस्यास्तिक्तैर्वनगजमदैर्वासितं वान्तवृष्टि-
र्जम्बूकुञ्चप्रतिध्तरयं तोयमादाय गच्छेः।
अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वां
रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय॥

(ग) अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान पुण्डरीकपटलस्य शोकविमोकः कोकलोकस्य अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम् एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाऽऽश्रित्य भवति परिमेष्ठिनः परार्द्धसङ्खया।

(घ) भगवन्! श्रूयताम् यदि कुतूहलम्। ह्यः सम्पादित-सायन्तनकृत्ये, अत्रैव कुशाऽऽस्तरणमधिष्ठिते मयि परितः समासीनेषु छात्रवर्गेषु, धीर-समीर स्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्यामानासु व्रततिषु समुदिते यामिनि-कामिनी चन्दनबिन्दौ इव इन्दौ कौमुदीकपटेन सुधाधारामिव वर्षति गणने, अस्मन्नीति-वार्ता सुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु पतंगकुलेषु, कैरवविकाश-हर्षप्रकाशमुखरेषु चञ्चरीकेषु, अस्पष्टाक्षरम् कम्पमान निःश्वासम, श्लथत्कण्ठम्, घर्घरितस्वरम्, चीत्कारमात्रम्, दीनतामयम्, अत्यवधानश्रव्य-त्वादनुमितदविष्ठतंक्रन्दनमश्रौषम्।

2. पूर्वमेघ में वर्णित मेघ के मार्ग पर सप्रमाण प्रकाश डालिए।
3. 'शिवराजविजय' के प्रथम निःश्वास में उल्लिखित राष्ट्रीय भावना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. मेघदूत (पूर्वमेघ) के आधार पर कालिदास की कवित्व शक्ति का सविस्तार विवेचन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. मेघ के प्रथम दर्शन पर यक्ष के मनोभावों का वर्णन कीजिए।
2. "लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि" सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
3. "शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम्" सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
4. पूर्वमेघ में नदी विषयक वर्णन पर एक लेख लिखिए।
5. 'शिवराजविजय' के आलोक में अम्बिकादत्त व्यास के अनुपम गद्य-लेखन पर प्रकाश डालिए।
6. 'शिवराजविजय' में वर्णित योगीराज के विषय में आप क्या जानते हैं ? स्पष्ट कीजिए।
7. 'शिवराजविजय' में प्राप्त गौरसिंह एवं यवन युवक के संवाद पर प्रकाश डालिए।
8. "कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्" उक्त सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही विकल्प चुनिए :

1. मेघदूत में वर्णित वक्रपन्था से अभिहित है—
   (क) उज्जैयिनी
   (ख) अलकापुरी
   (ग) हिमालय पर्वत
   (घ) विन्ध्याचल पर्वत

2. शरभ आदि अपने मार्ग का उल्लंघन करे तो मेघ क्या करेगा ?
   (क) वर्षा करेगा
   (ख) पत्थर मारेगा
   (ग) ओला वृष्टि करेगा
   (घ) इनमें से कोई नहीं

3. विद्योत्तमा द्वारा उक्त "अस्ति" शब्द को लेकर कालिदास ने किस ग्रन्थ की रचना की ?
   (क) मेघदूत
   (ख) कुमारसम्भव
   (ग) रघुवंश
   (घ) ऋतुसंहार

4. 'शिवराजविजय' में कुल कितने निःश्वास हैं ?

   (क) 10

   (ख) 13

   (ग) 12

   (घ) 16

5. सुमेलित कीजिए—

(क)	कादम्बरी	—	नाटक
(ख)	ऋतुसंहार	—	खण्डकाव्य
(ग)	कुमारसम्भव	—	कथा
(घ)	अभिज्ञानशाकुन्तल	—	महाकाव्य

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सत्य/असत्य लिखकर दीजिए—

6. यक्ष कुबेर का अनुचर था।

7. मेघदूत का मङ्गलाचरण मन्दाक्रान्ता छन्द में नहीं है।

8. "सतीर्थ्य" शब्द का अर्थ सहपाठी है।

9. कन्या ने आश्रम में आश्रय नहीं पाया।

10. गजनी निवासी महमूद ने भारत को तेरह (13) बार लूटा।